अद्वैतखंडन.

छपावी प्रसिद्ध करनार

महाराज श्रीबिहारीलालजीनी आज्ञाथी

पंड्या दोलतराम किरपाराम.

नडीयाद मध्ये

उभाण भागोळे कुंभारपोळमां मेहेता सुरजराम

नथुलाले पोताना प्रेसमां छाप्युं.

संवत १९४१—सने १८८४

कींमत रु० ०—२—०

२३४४

अद्वैत खंडन.



ॐश्रीस्वामिनारायणाय परब्रह्म
णे नमोनमः ॥ सदेवसौम्येदमग्र
आसीदेकमेवा द्वितीयं ब्रह्म ए
आदिक जे ब्रह्मने कहेवावालि श्रु
तियो तेनो अनुभवे रहित जे आ
धुनिक ज्ञानी तें सजातीय विजा
तीयने स्वगत भेद रहित ब्रह्म छे
एवि रित्ये अर्थ करेछे तेमां मोटा
मोटा बाध आवेछे ते कहिये छैये
जे ब्रह्म शब्द थकि उत्तर जे एक
वचन विभक्तिनु छे तेणे करिने ब्र
ह्म एक सिद्ध छतां एक पद शावा

स्ते आप्यु तो तु कहिश के सजा
तीय भेदनि व्यावृत्तिने अर्थे आ
प्यु छे तो अमे पुछीये छैये जे ब्र
ह्म सजाति भेद छे ने ते कियो ने
जो छे तो तेनि निवृत्ति केम थशे
ने जो सजाति नथि तो एक पद
व्यर्थ पडयुं तेम छतां एवकार शा
माटे आप्यो तो तमे कहेशो के वि
जातिय भेदनि नीवृत्तिने अर्थे क
ह्यो छे ते पण जो विजातीय भेद
स्वसिद्ध छे तो तेनि निवृत्तिने अ
र्थे कहि शकाय ते पण भेद नथी
तारे एवकार पण व्यर्थ पडयो अ
ने अद्वितीय पद तो गुणवडे करि

ने पण सद्दितीय पणाने नथि स
हन करतु त्यारे त्यां पुछवानु के क
ल्याण गुणे रहित ने आनंद रहि
त एवा ब्रह्मनी सेवाथि शि तमारे
मते पुरुपार्थ सिद्धि थई?कांइ न थ
ई; शाथे केज्यारे ब्रह्ममां आनंद
नथि रह्यो त्यारे एने जाणनारने
ए आनंद क्यांथि आपशे?माटे ए
कांइ ब्रह्म निरूपण थयु कहेवाय
नहि, केम जे श्रुतिये सच्चिदानंद
एवुं ब्रह्म कह्युं छे,ते ज्यारे तमे स
त्य कहेता हो तो सांभलो, अमे
कहिये छैये जे सत् शब्दे करिने अ
विनाशिपणुं ए एक भेद ने चित्

शब्दे करिने प्रकाशपणुं ए बिजो
भेद ने आनंद शब्दे करिने सुख
पणुं ए त्रिजो भेद एवि रित्ये ए त्र
ण स्वगत भेद ब्रह्मने विषे आ-
व्या माटे ए भेदनि निवृत्ति कर-
तां तो सर्व शुन्यवाद सिद्ध थयो
अने तमे केशो जे एतो जडमि-
थ्या ने दुःखरुप एवि जे माया ते
थि विलक्षण ब्रह्म तेनां सच्चिदा-
नंद ए त्रण विशेषणछे तारे तेमां
आ आशंका छे जे ए त्रण विशे
षणरूप जे ब्रह्मनां लक्षण तेथि पृ
थक् ब्रह्म वस्तु शुंछे ते कहो, त्यांरे
तमे कहेशो जे ए ब्रह्म तो सच्चि-

दानंद धर्म छे त्यारे एमां आ आ
शंका छे जे ए त्रण धर्म एज ब्रह्म
छे के ए त्रण धर्म जेमां रह्या छे
ते ब्रह्म छे तारे तमे केशोजे ए त्र
ण धर्म जेमां छे एवुं ब्रह्म छे तारे
तेमां आ आशंका छे जे ए त्रण
धर्म जेमां रह्या छे ते धर्मि शुं व-
स्तुछे ने आ आशंका जे न जाणे
तेने बुद्धिमान न जांणवो एवि री
त्ये स्वगत आदिक भेद रहित प-
णा एमां एवाबहु बाध आवेछे ने
श्रुतिमां एम कह्युं छे जे एद्दष्टा ए
वुं जे ब्रह्म तेणे माया सामु जोयु
तारे ब्रह्म जे ते नेत्रवान थयु ने पो

ता थकि अन्य जे माया ते सामु
जोयुं एम कह्यामां माया ने ब्रह्म
ए बे वस्तु सिद्ध थयां ए विजाती
य भेद थयो अने वासि श्रुतिये
कह्युं छे जे ब्रह्म तेणे एम संकल्प
कर्यो जे हुं बहुरुपे थाउं त ए वा
तमां ब्रह्म हृदयवान थयुं ने मन-
वालुं थयुं अने एवी रीत्ये जोवारू
प ने संकल्प करवारूप जे क्रिया
तेने करवे करिने क्रियावान ब्रह्म
थयुं ने जे क्रियावान होय ते मूर्त्ति
मान होय ने जे मूर्त्तिमान होय ते
एक देशमां रह्यो होय ते बिजा
स्थानमां रह्यो होय तेनि सांमुजु

वे अने तमे केशोजे एक ब्रह्मज छे
ते बहु जीवरूपे थयुं छे तारे तेमां
पण आ मोटो बाध आवे छे जे
सदा ज्ञानवानने स्वतंत्र ने माया
ये रहित ने अक्षर ने निर्बंध एवुं
जे ब्रह्म ते बहु जीवरूप थयुं तारे
ए ब्रह्म अज्ञानि थयुं ने परतंत्र थ
युं ने माया वेष्टित थयुं ने क्षरणाना
वे जुक्त थयुं ने बंधने युक्त थयुं ने
एवि रीत्ये आज्ञानादिक दोष यु-
क्त थयुं जे ब्रह्म तेने नजने करिने
अज्ञानादिक दोष केम टलशे अ
ने तमेकेहेशो, ए अज्ञानादिक दो
ष तो मायाने संबंधे करिने छे ए-

ण स्वतः सिद्ध ब्रह्ममां क्यां छे ता
रे तेमां अमे पुछीये छैये जे ए ब्र-
ह्मने मायानो संबंध ते स्वइछाये
थयो छे के पर इछाये करिने थयो
छे अने जो स्वइछाये करिने के'शो
तो ए अज्ञानादिक दोष करिने जे
सुख दुःखादिकनुं भोक्तापणु ते ब्र
ह्म पोत पोतानि मले पोताने विषे
कर्युं केहेवाय तारे ए ब्रह्ममां बुद्धि
मानपणुं आव्युं केमजे जे डाह्यो
मनुष्य होय ते पोताने दुःख थाय
एम करतो नथि अने जो पर इछा
ये करिने के'शो तो ब्रह्म ते मायाने
आधिनथयुं पण स्वतंत्रनथयुं मा

टे माया सबल जे ब्रह्म तेने भज
ने करिने माया क्यांथि टलशे अ
ने भगवद्गीतामां कह्युं छे जे मारा
धामने जे पामे छे ते पाछो फरिने
आ संसारमां आवतो नथि ने
आतो अक्षर एवुं जे पोते ब्रह्म ते-
ज क्षरभावने पामिने बहु जीवरु
प थया ए मोटो बाध आव्यो अ
ने तमे केशो जे पोते ब्रह्म क्यां ब-
हुरूपे थयुं छे एतो जेम जले भरेल
मृतिकानां बहु पात्र तेने जोगे क
रिने एक सूर्य ते प्रतिबिंबरूपे बहु
जणायछे ॥ तेम एक ब्रह्मछे ते अ
विद्यारूपे बहुपणाने पांमि जे मा

या तेने योगे करिने बहुरुपे जणा यछे तारे तेमां आ मोटो बाध आवे छे जे प्रतिबिंब तो जे सूर्यनि पेठे एक देशमां रह्यो होय तेनुंज केहेवाय पण जेनुं सर्वने विषे समपणे व्यापकपणुं होय तेनुं प्रतिबिंब न के'वाय माटे तमारे मते सर्वने विषे समपणे व्यापक एवुं जे एक अद्वितीय ब्रह्म तेनां बहु जीवरुपे प्रतिबिंब थयांछे एम नहि के'वाय ने प्रतिबिंब केहेशो तो व्यापकपणुं नहि केहेवाय ने वलि जल जेवुं ने काच जेवुं जे निर्मल पदार्थ होय तेने विषे एक देशी जे सूर्या-

दिक तेनां प्रतिबिंब घटे पण अंध
काररुप एविजे अविद्या माया तेने
विषे ब्रह्मनुं प्रतिबिंब न घटे ते सा
रु ए प्रतिबिंब वाद ते खोटोछे. अ
ने तमे केहेशो जे जेम आकाश छे
ते घटमटरूप उपाधिये करिने ब-
हुरुप जणाय छे तेम एक अद्वितीय
य जे ब्रह्म ते कारण अव्याकृत
आदिक देहने योगे करिने जीव
ईश्वरपणे करिने बहुरुप थया ज-
णाय छे तारे ए वादने विषे ब्रह्मना
अद्वितीय पणानि हानि थाय ए
मोटो बाध आवे छे तथा ए दृष्टांत
ते सिद्धांत साथे मलतु आवतु न-

थि केवि रीत्ये तो एक आकाश बी
जी पृथिवी त्रिजा पृथ्वी थकी थ-
या एवा घटमट ने चोथो ए घट म-
ट उपाधिनो करनारो कुंभार ए चा
र थयां तेमां आकाश जडने शुन्य
छे ने पृथ्वी पण जड छे ने पृथ्वीनां
कार्य जे घट मट ते पण जडछे ने ते
घट मटनो कर्त्ता जे कुंभार ते आ-
कारवानने चैतन्य छे अने एक अ
द्वितीय ने अकर्त्ता चैतन्य जे ब्रह्म
ते आकाशने ठेकाणेछे ने माया ते
पृथ्वीने ठेकांणे छे ने कारणने अ-
व्याकृत शरीर ते घट मटने ठेकांणे
छे ने चोथो ए घट मटनो कर्त्ता कुं

भार तेनि पेठे कारण ने अव्याकृत शरीररूप उपाधिनो कर्त्ता कोण छे ते तमे कहो ने जो न कहो तो एवा द खोटो छे अने जो कर्मने माया आदिक वस्तु तेने कर्त्ता केहेशो तो ए कर्मने माया आदिक वस्तु तेतो जड छे ते जडने विषे कर्त्तापणुं घ-टे नहि अने तमे केहेशो जे जेम कोइ पुरुषने रज्जुने विषे सर्पनो भ्र-म थाय छे. तथा छिपने विषे रुपानोभ्रम थायछे ने स्थंभने विषे चोरनो भ्रम थाय छे तेम ब्रह्मने विषे माया तथा जीव ईश्वररूप जगत-नो भ्रम थाय छे तारे तेने विषे अ

मारि आ आशंका छे जे मनुष्य
ने रज्जुने विषे जे सर्पनो भ्रम था
य छे तेतो कोइ ठकांणे साचो सर्प
दिठो छे तेणे करिने थाय छे ने छि
पमां रुपानो ने स्थंभमां चोरनो
भ्रम थाय छे ते पण साचु जे रुपु
ने साचो जे चोर ते दिठा छे तो ते
णे करिने थाय छे माटे तमारे मते
मिथ्या ने कल्पित ने अवस्तु एवुं
जे माया जीव ईश्वररुप जगत् ते-
नो आरोपण रूप भ्रम ते ब्रह्म ते
ने विषे केम घटे ने जो कोइ स्थान
के माया जीव ईश्वर रुप जगत् सा
चु होय तो घटे अने वलि द्दष्टांत-

मां तो पूर्वे दिठां जे सर्प रुपु ने चो
र ते साचांछे ने रज्जु छिपने न स्थं
ब्भ ते पण साचा छे ॥ ने तेमने वि
षे सर्प रुपु ने चोर ते साचां छे ने
रज्जु छिपने स्थंब्भ ते पण साचां
छे ने तेमने विषे सर्प रुपु ने चोर ते
मने देखवावालो पुरुष ते पण सा
चो छे ने सिद्धांतमां तो तमारे मते
एक ब्रह्मज सत्य छे ॥ ने जगत् नो
मिथ्या छे ने जेणे ब्रह्मने [illegible] ए
जगत् दिठु ते देखवावाल[illegible] [illegible]ण मि
थ्या छे माटे ए दृष्टांत [illegible]रु सि-
द्धांत साथे विरुद्ध छे ॥ ने ज्यारे त
मे दोषने असत्य मानिने भ्रमने

साचो मानो छो तारे अधिकरण
ने पण मिथ्या मानिने पण भ्रम
ने साचो मानो तारे तो तमारे ब्र
ह्मने पण मानवानी जरुर नहि
माटे तमारे मतेज तमारु बोलवुं
मिथ्या थयु ॥अने वलि तमे केशो
जे जेम एक चंद्रमाने विषे बे चंद्र
जणाय छे तेम एक ब्रह्मने विषे ज
गतरुप द्वैतपणु जणाय छे तारे ए
ने [illegible] तमारे मते मोटो बाध छे
शाथि [illegible] चंद्रने विषे जे बे चंद्र
जणाय [illegible] तो देखनारा पुरुषना
नेत्रने विषे तीमिरादिक दोष छे ते
साचो छे तेथि तेने बे चंद्र जणाय

छे ॥ अने ब्रह्मने विषे अविद्याये करिने द्वैतपणु जणायु ते अविद्या पण तमारे मते मिथ्या छे ने देखनारो पण मिथ्या छे माटे ए दृष्टांत ते सिद्धांत साथे विरुद्ध छे अने तमे केहेशो जे कनक ते जेम कुंडल थायछे तेम एक एवुं ब्रह्म जेतेअंशांशि भावे करिने जीव ईश्वरादिक सर्व रूपे थयु छे त्यारे एने विषे पण आ मोटो बाध छे जे विकारवानने छेदवा योग्य एवुं जे सुवर्ण तेनां कुंडल आदिक आकार तेतो घटे ने वलि ए आकार ते विजातीय नथि ने ए आकारनो करनारो सो

नि भिन्न छे तेम ब्रह्म तो निर्विका
र छे ने अछेद्य छे ने अकर्त्ता छे ते
विकारने केम पांमे ने विजातीयप
णे करिने जड मिथ्या ने दुःखरुप
जगतूरुपे केम थाय ने सोनिनी
पेठे विकारनो करनार कोण छे ते
माटे कनक कुंडल दृष्टांत पण त-
मारे मते सिद्धांत साथे न मल्यु ॥
अने वलि तमे एम केहेशो जे एक
ब्रह्म छे ते स्वईछाये जीवरुपे थयु
छे ॥ तो एने विषे पण मोटो बाध
आवे छे जे कोइक डायो मनुष्य
होय ते पण पोताने दुःख तेवि रि
त्ये पोते करतो नथि ने आतो स-

वैज्ञ एवुं जे ब्रह्म तेज पोतानि इछा
ये करिने पशु मनुष्यादिक अने
क जीवरूप थइने नरक चोराशिनु
मोटुंकष्टभोगवेछे एवि रित्ये पोता
नेज दुःखनु देनारु जे जगत् तेनु
जे ब्रह्मने निर्माण करवुं ए ब्रह्मने
विषे संभवे नहि अने तमो एम
कहोछो जे ब्रह्मज सर्व जीवरुपे थ
यु छे तारे तेमां पण आ आशंका
छे जे केटलाक ऋषिछे ते पोताना
कल्याणने अर्थेकृछ्छचांद्रायण इंद्रि
योनु दमन तथा वेदाध्ययन श्रव-
ण मनन निदिध्यास आदिक प्र-
यासने करे छे ते करवानुं शुं प्रयो-

जन छे केम जे ए करनारो ते क्यां
बिजो छे एतो पोते ब्रह्मज छे एवि
रित्यना मोटा बाध आवे छे माटे
तमारो अंश अंशिवाद ते खोटोछे
अने तमे केशो जे ज्यां सुधि अ-
ज्ञान दशा छे तां सुधि जीव ईश्वर
माया गुरु शिष्य इत्यादिक जग-
त् साचु जणाय छे ने ज्यारे ज्ञान
थाय छे तारे तो एक ब्रह्मज सत्य
छे ने बिजु सर्वे असत्य छे तारे ए
मां अमे आशंका करिये छैये जे
साचा जे ज्ञानि पुरुष तेने एक ब्र
ह्म सत्यछे ने बीजु सर्वे तेमिथ्याछे
एवुं ज्ञान थयु छे के नाथि थयु अ

ने जो थयुछे एम केहेशो तो ते ज्ञा
नि पुरुषने शिष्य प्रत्ये उपदेश क
रवो नहि घटे केम जे उपदेश कर
वानि तो एम रीति छे जे आ हुं गु
रु ते ज्ञानी छुं ने आ शिष्य ते अ
ज्ञानि छे ने आवि रित्यना ज्ञान-
ने उपदेश करिने ए शिष्यना अ-
ज्ञानने हुं टालु एवो भेद साचोज
थायछे ने गुरुने तो एक ब्रह्मनु ज्ञा
न थयुं छे माटे सर्वने ब्रह्मरुपेज दे
खे छे माटे उपदेश करवो नहि घ
टे ने एगुरुनेएकब्रह्मनु ज्ञान नाथि
थयु एम केहेशो तो अज्ञानि गुरु
ते शिष्यने शो उपदेश करे केमजे

जेम शिष्य अज्ञानि छे तेम गुरु पण अज्ञानि छे तारे तो गुरु शि-ष्य ए बेयने विषे समपणु आव्युं पण गुरुने विषे अधिकपणु न आव्युं माटे सर्व शास्त्रने विषे ज्ञानि गुरुनेज उपदेश करवानो अधिकार छे एम कह्युं आवि रीत्यने बाधे युक्त जे ब्रह्म निरूपण ते-ने मोटा कहे नहि ॥ ने पूर्वापर श्रुतियोना बाधे रहित जे ब्रह्म निरुपण तेतो शेषना अवतार जे रामानुजाचार्य तेमनु करेलु जे व्याससूत्रनु श्री भाष्य तथा भगवद्गीता भाष्य तेमां छे तेने अनुसारे

अमे आ ब्रह्म स्वरुपनु निरूपण करिये छैये जे सर्व श्रुति स्मृतिने विषे ब्रह्म केतां सहज स्वभावे स्वरुपे करीने ने गुणे करिने मोटा एवा जे पुरुषोत्तम भगवान ते सदा दिव्य मूर्त्तिमान दिव्य विग्रह कर्या छे ने ए जे पुरुषोत्तम भगवान ते पोताना अक्षर धाममां रह्या थका पोतानि शक्तिये करिने सर्वे जीवने यथायोग्य कर्म फल देवाने अर्थे अंतर्यामि रुपे बहुपणाने पाम्या थका सर्व जीव प्रत्ये व्याप्या छे अने ए पुरुषोत्तम भगवान मायिक अवयवे रहित छे ने स

दा दिव्य अवयवे जुक्त छे अने पो
ताना तेज पुंज तेणे करिने ए मूर्त्ति
ढंकाणि छे ते सारु एकांतिक भ-
क्तिये रहित एवा जे केवल आत्म
ज्ञानि ते ए मूर्त्तिने देखता नथि मा
टे निराकार कहे छे अने एकांति-
क भक्तिये सहित जे भगवन्निष्ट
ज्ञानि तेतो तेजमां ए मूर्त्तिने देखे
छे माटे सदा साकार कहे छे अने
ए भगवानने विषे मायाना सत्वा
दिक गुण नथि माटे ए निर्गुण छे
ने ए भगवानने विषे सत्य संक-
ल्पपणु तथा निरतिशय ज्ञान ऐ-
श्वर्य तेज बल प्रतापपणु ए आ-

दिक अनंत कल्याणकारि दिव्य
गुण रह्या छे माटे सगुण छे अने
ए भगवानमांथि जीवने उपज्या
कहिये तो गीतामां ने वेदमां जी-
वने अजन्मा सनातनने नित्य क
ह्या छे ते घटे नहि माटे जीव मा-
याने पुरुषोत्तम भगवान ए त्रण्ये
अनादिछे ने ए भगवान्छे ते मा
याने जीवने मुक्त तेना नियंता छे
ने स्वतंत्र छे ने सर्व जीव छे ते मा
याये करिने बंधाणा छे ने परतंत्र
छे अने ए जे भगवान ते दयाये क
रिने जीवना कल्याणने अर्थे युग
युगने विषे रामकृष्णादिक अव-

तारने धरे छे ते ज्ञगवानने ज्यारे
ए जीव ज्ञजे छे तारे मायाना बंध
नथि छुटिने सच्चिदानंदमय एवि
ज्ञागवति तनुने पामिने ज्ञगवान
ना धामने पामे छे ने अखंड ज्ञ-
गवाननि सेवामां रहेछे ने फरिने
कालने कर्मने माया तेमने आधि
न थता नाथि॥एवि रीत्ये सर्व वेद
पुराण स्मृतियोनो सिद्धांत छे॥॥
॥पदरागगर्बि॥ अक्षरधामथिआ
वियासहजानंदस्वामि॥ अगणि
तमुक्तनेसावियासंगेबहुनांमी॥ १
॥आविवश्यागढपुरमांप्रभुज्ञवज्ञ
यहारि ॥करिकृपाअदभूतनेतार्यां

नरनारि ॥२॥ पुरूषोत्तमनावास-
थिपुरिशोभेछेसारि ॥ अखंडरया
अलबेलडोआविदेवमोरारि॥३॥
एपुरिअक्षरधांमथिनहिनुन्यलगा
र ॥ कृष्नानंदकेकृपाकरी रियासु-
खदातार ॥४॥ पद १ ॥ एपूरिमांए
कस्थाननुंअक्षरभुवनछेनाम ॥ ते
मांअतिशेप्रीताथिपोतेरियाघनश्यां
म ॥१॥ आगल्यएकआगारछे सुं
दरशोभीतुंसार ॥श्वेतद्विपपतिशा
मलोपधराव्यातेठार ॥१॥ महामु
कएकआपनो जेनेशांमसुंस्नेह ॥
श्रीहरीनीसभाकारणे धर्योशिव
नोदेह॥३॥चोकसुंदरराखियामध्यो

अतिओपेअनुप ॥ कृष्नानंदके
कृपानिधिकेरेसत्राअनुप॥१॥पद
२॥ एहभुवननेआगारएबरोबरच
केवाय ॥ नुन्यनहिएकएकथीसम
तुल्यलेवाय ॥१॥ सर्वोपरिजेश्रीह
रिइश्वरअवतारि ॥ गोपिनाथरू
पेबनिवशियागीरधारि ॥२॥ देव
तिरथनेजक्तमांफरेतेसंगलाय ॥प
णगोपिनाथनिरख्यातणुंपुन्यअ
धिकगणाय ॥३॥ लक्ष्मिबागमां
मावनुंमंदिरनहिनुन्य ॥ जगन्नाथ
नीजात्राथकिथायसोगणुंपुन्य ॥
४॥ दुर्गपुरिनीनिंदाकरेतेमहापंच
पापि ॥ कृष्नानंदकेकृतांततेनेमा

रेदुखआपि ॥५॥ पद ॥ ३॥ घणुंरि
याणगढपुरमांविजेरीयालगार॥ गा
ढोअवस्थाएस्थलमांतेनोकउंनि
रधार॥ १।सतावनेबेठागादियेजेत
पुरनमांइ॥ पछेफरस्याछेसोरठमांप्र
भुजनसुखदाइ॥ २॥सोरठकछगुर्ज
रनकाठियावाडकउं ॥ सातवर्षसु
धिशांमलेसुखआप्यांछेवउ ॥ ३॥
सोरठदेशमां शांमलेकरयां उत्तम-
कांम ॥ कृष्नानंदकहेकउतेहगांम
नानांम॥ ४॥ पद॥ ४॥ललितअति
पुरलोजनेआखुंपिपलांणुं॥ मांग-
रोलमाणावद्धनपंचाणुंवखांणुं ॥
१॥ मेघपुरअगत्राइनेकउकालवां

णि॥ एसरखेगांमउपस्येवासेबउद
यात्र्यांणि॥२॥ महोत्सवमांगरोल
मांपिपलांणेचोराशि ॥ अगत्राइ-
आपेकस्योउत्सवअविनाशि॥३॥
पंचातिरथिमांप्रेमसुंसौजननेजावुं
॥कृष्नानंदकेकउंनाकिओझतमां-
नावुं॥४॥पद॥५॥धन्यधन्यभुमिए
हछेपिपलाणानिनारि॥जियांरा-
मानंदस्वमीनेमल्याअवतारि॥१
॥जेमछापैयाछेजन्मनुंतेमादिक्षाने
गादि॥पांम्यापोतप्रथमातियांमाटे
तिरथआदि॥२॥पांम्यादिक्षापि-
प्पलमांजेतपरआन्निशेक ॥ निन्न
न्निनगांमबेयछेएमजांणोविवेक॥

३॥ जातांवलतांजनसौमलिजेतपु
रमां जाज्यो ॥ पछेकरिपंचतिराथि
सौओझतमांनाज्यो॥४॥सातवर
ससोरठमांवाशियाअविनाश ॥ क्र
ष्नानंदके क्रपानिधियेकरयोगढडे
वास॥५॥पद॥६॥ संवत्अढारचो
सठमांवासुदेवनेस्थाप्या॥पुजवा
प्रेमीजननेवालेमहानिधिआप्या
॥१॥ प्रथमदेवपधरावियाथावाज
नपरायण॥ माटेएह्नुंनामछेआ-
दिनारायण॥२॥ ओपेछेआधिक
ओरडारुडोशोभेछेचोक॥दर्शनदे
शाविदेशाथिघउआवेछलोक॥ ३ ॥
चोकमांसुंदरशोभ्नतोदिशोलिंबअ

पार॥ कृष्नानंदकेअवशनातरुमां
नेधिकार॥४॥पद॥७॥धन्यधन्यल
क्ष्मिबागनेवालेप्रख्यातकिधि॥वि
जीतटवृंदावनानिपोतेउपमादिधि
॥ १ ॥ अनुपएउववनमांएकबेठ
कसारि॥त्यांबउनामीविराजता-
अखंडगिरधारि॥२॥राधाबागर
रलियामणी न्नक्तिबागछेबिजी ॥
जुगलबागआतिजोडछेजीयांबउ-
फरयाश्रीजी॥३॥ गोकुलवृंदावन
निकहिउपमानजाय॥ प्रगटप्रभु-
ज्यां पधारियातेतोआधिककेवाय
॥४॥अखंडानंदमुनितणिशेवाअ
न्नसेकिधि॥कृष्नानंदवरआपियो

पुरिवरकारिलिधि॥२॥पद ॥८॥ व
लिकउनारतालपमां वालेवउकरि-
लिल॥ करेसमैयाशोच्नतासाजन
करिन्नेला॥१॥छापगोमातिरणछा
उजीवरतालमांरुथाप्या।गांमकर्युं
एहगादिनुं॥ वालेवउसुखञ्राप्यां
॥२॥ञ्राज्ञाकरिञ्रालबेलडेसतसं-
गिनेवली॥छापलोवरतालयमांह
रिजननेमली॥३॥ पुजज्योप्रेमेसो
तमेञ्राचारजनेञ्रावि॥ कृप्नानंद
केकृपानिधिएविञ्राज्ञाकावि॥४॥
पद ॥९॥ ञ्राविनाशिनिञ्रागन्या
सैावेशिशचडावि॥ वारमासमांबे
वारसैाकरेसमैयाञ्रावि ॥१॥पाते

प्रभुपणतेसमेवरतालयपधारे॥नि
र्वनारासउजननेग्रतिहर्षवधारे॥
२॥वालमजीयेवरतालयनेकारिदेश
वजिति॥लक्ष्मिनारायणदेवथीवर
तालशोभिति॥३॥वलीकउवरता
लयनेवालेलाडलडाव्यां॥कृष्नानं
दहरिक्रष्नजीरमानाथपधराव्या-
॥४॥पद॥१०॥प्रथमपंचोतेरमां
स्थाप्यानाथविशाला॥दर्शनकरि
देवनांथियांजनसुखाला॥१॥ल-
क्ष्मिपति पधराविंयावरतालयमां-
जारे॥नरनारायणदेवनेउथाप्या-
तेवारे॥२॥नरस्थाप्याधरगांममां
नरायणछेजेह॥वरानपुरेबीजिया

पोतेअखंडएह॥३॥सतावनथिते-
छेंतेरसुधिसमैयाकस्या॥कृष्नानं
दकेत्यांसुधितेनानिमनठस्या ॥४
पद ॥११॥ छोतेरेसमैयाबांधिया-
बेउवरतालयमांइ॥बेउसमैयाउपरे
पोतेजइपाचेत्यांइ ॥१॥ छापसमै-
यानेगोमातिरेछे वरतालयदाडि ॥
माटेबिजेदेवाछापानिश्रीमुखेथि -
नापाडि॥२॥आइश्रीरामप्रताप-
जीजेनेश्रीजीसुस्नेह॥वचनमानि
वालातणुंपाल्युंअखंडएह॥ ३ ॥
बारमासमांबेवखतआवेवरतालय
वसता॥कृपानिधिहरिकृष्नजीदइ
दर्शनमलता॥४॥अहोएवीवरता-

ळछेप्रसादिनिबउ ॥ क्रप्नानंदवर
तालनोमहिमा केटलोकउ ॥ ५॥
॥पद॥ १२॥महिमाअपरमपारछे-
वरतालयनोवली ॥ नवब्रह्मादेवा
धिशतेतेनेनशकेकालि॥ १॥वालेमा
रेवरतालयमांगादिपातानिश्चापि ॥
दत्तपुत्रकरचादोयनेआचारजपद-
आपि॥२॥सन्नामंडपवरतालयमां
सारोसोन्नेछैवालि ॥ हरिमंडपहरि
क्रप्ननोतेनुंसुंदरफली ॥३॥ अति
उत्तमएचोकमांबेउपाटढलाविं॥क्र
प्नानंदपाटउपरेदत्तबेसास्याआ-
वि॥४॥ पद ॥ १३॥ दत्तबेपाटबेसा
रियावरतालनेमांड॥हरिजनेमली

पूजियानिराजनकरित्यांइ॥ १॥प-
छेकरीछेपेरामणिकडांहारअंबर ॥
अविनाशियेकरिआगन्याकरिपू-
जासुंदर ॥२॥ एविरित्येवरताल्य-
मांआपिदत्तनेगादि ॥माटेबंधवबे
यनुंस्थांनजन्मनुंआदि॥३॥जेमछे
श्रीजिनेजन्मनुंजेतपरापिपक्षाणुं॥
कृष्नानंदबेयबंधुनोजन्मवरताल-
जांणुं॥४॥पद॥१४॥माटेतिरथमो
टुंठरयुंवरताल्लतेआति॥गङ्गाविपो
तगोमातिजियांअक्षरपति ॥ १ ॥
गोमतिसरोवरनेजारेगाल्लवाजाय
॥सुंदरव्रक्षकदंबनोपोतेजेबसेत्यां-
य ॥२॥ विरहहतोएहव्रक्षनेपूर्वज-

न्मनोत्र्यारि॥सुखथयुंएनिंछातिये
निरख्यागिरधारि॥३॥करिसेवा-
नथुबेमासिगोमातिमांअद्भुत॥कृपा
निधिनथुजेष्टनेकयाराधानासुत॥
४॥मल्यापोततेनेप्रितथिआशाए
मनिपुरि॥कृष्नानंदरमानाथना-
थाप्यादासहजुरि॥५॥पद॥१५॥
वसिवरतालथिपूर्वमां छेवेआंबा-
अनुप॥तियांहिंडोलोबंधाविये॥झु
ल्याशांमस्वरूप॥१॥एहस्थलेअ-
वतारीतेहरिजननेसंगे॥होजगला
विबेरंगनापोतरम्याछेरंगे॥२॥एह
गांमथिउत्तरमां बांमणोलिनीरां-
प्ये॥पोतप्रभुजिपधारियाहरिजन

नितांण्ये॥ ३॥शत्यरइलइरासनेति
यांतुरंगफराव्या॥ दर्शनदेह्वानिज-
दासनेपाछावरतालयआव्या ॥४
॥रम्याजमाजियांश्रीहरितेतोवात-
अमुल्य॥ कृष्नानंदवरतासनेकरि
अक्षरतुल्य॥पद॥३६॥ ॥ ॥

समाप्त.